Shodhpith
International Multidisciplinary
Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 1 Issue: 6 November-December 2025

# हिंदी सिनेमा में पौराणिक हिंदी फिल्मों का विकासः आधुनिक परिप्रेक्ष्य

**डॉ0 अंजली त्यागी**

*असिस्टेंट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, श्री अग्रसेन कन्या पी0जी0 कॉलेज वाराणसी*

**हिमांशु कुमार**

*असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, बयालिसी पी. जी. कॉलेज जलालपुर, जौनपुर*

## शोध सार–

भारतीय समाज में पौराणिक कथाएं सदैव समाज के धार्मिक, नैतिक, दार्शनिक व सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली रही है। भारतीय सिनेमा में इन पौराणिक कथाओं का समावेश प्रारंभिक काल से ही होता रहा है । दादा साहब फाल्के निर्मित राजा हरिश्चंद्र (1913 )से प्रारंभ होकर यह परंपरा स्वतंत्रता पूर्व काल में धार्मिक आदर्श एवं नैतिकता के उच्च आदर्शों के प्रचार प्रसार एवं स्वातंत्र्योत्तर काल में राष्ट्रीय चेतना के निर्माण हेतु सतत गति से गतिमान है। 1970 ई० से 2000 ई० के मध्य टेलीविजन धारावाहिकों जैसे रामायण एवं महाभारत ने इन आख्यानों को घर–घर पहुंचने का कार्य किया। सन 2000 ई० के बाद तकनीकी प्रगति ,एनीमेशन और 3क ग्राफिक्स ने पौराणिक कथाओं को नए आयाम प्रदान किये ,जिसमें धार्मिक एवं नैतिक उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति के साथ–साथ व्यावसायिक एवं मनोरंजन परक प्रवृत्तियों के दर्शन भी होते हैं ।प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी सिनेमा में पौराणिक आख्यानों की प्रस्तुति और उनके परिवर्तित स्वरूप का विश्लेषण करता है साथ ही साथ यह भी दर्शाता है कि सिनेमा का दायित्व केवल मनोरंजन तक सीमित न होकर समाज में धर्म , संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना भी है।

**की–वर्ड्स**– पौराणिक कथाएं, संस्कृति , लोक कथाएं, नैतिक मूल्य ', महाकाव्य ', धारावाहिक, सिनेमा,

## परिचय–

पौराणिक कथाएं और लोक कथाएं कई संस्कृतियों और सभ्यताओं की नींव रही है। किसी भी संस्कृति में पौराणिक कथाओं के द्वारा वहाँ के विश्वासों ,मूल्यों और दर्शन को मूर्तरूप मे देखा जाता है, जो कि उस देश के हित में कार्य करता है और वहाँ के लोगो को एक स्वरूप में पिरोये रखता है। भारतीय संस्कृति में विभिन्न पौराणिक कथाएं व जनश्रुतियां प्रचलित हैं। इन पौराणिक कथाओं को समय –समय पर साहित्य एवं महाकाव्य के रूप में परिलक्षित किया गया है। जिन्हें आज हिन्दुओं की धार्मिक आस्था के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जाता है। इन पौराणिक कथाओं के पात्रों को धर्म के प्रतीकात्मक रूपों में स्वीकार करते है।

आज का सिनेमा दुनिया को इन्ही पौराणिक कथाओं, किस्सों व पात्रों को अपनी सिनेमाई कहानियो में हवाला देते हुए वर्तमान के आलोक में अतीत की पुनर्व्याख्या करके उन समकालीन मुद्दो पर प्रकाश डालते हैं।सिनेमा

में कई लोकप्रिय प्रचलित पौराणिक कथाओं की कहानियों को फिल्मों के रूप में शामिल किया जा रहा है जिन्हे नए अभिनय व पात्रों के साथ दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। समान्यतः सिनेमा में पौराणिक कथाओं का प्रयोग व चित्रण नया नहीं है, बल्कि इन कथाओं का प्रचलन भारतीय सिनेमा के पदार्पण से रहा है। भारतीय सिनेमा के जनक धुंडिराज गोविंद फाल्के ने, जिन्हें हम दादा साहब फाल्के के नाम से जानते हैं ने ही पौराणिक फिल्मों का निर्माण आरम्भ किया था। दादा साहब फाल्के ने देश में फिल्में बनाने का चलन शुरू किया था ।उन्होंने देश की पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र को सन 1913 में बनाया था जिसके लिए उन्हें भारतीय सिनेमा पितामह की उपाधि दी गई । इसके बाद धार्मिक व पौराणिक फिल्में व्यापक स्तर पर बनने लगी। तकनीकी के आगे बढ़ने के साथ–साथ ध्वनि ने भी फिल्मों में प्रवेश किया तथा फिल्मों को और भी दिलचस्प बनाने में सहयोग दिया। आजादी के बाद भारतीय सिनेमा में एक समय ऐसा आया जिसमें देशभक्ति और आम आदमी की कहानियों ने फिल्मों में अपनी जगह बनाई ,परंतु धर्म की मजबूत जड़ों ने सिनेमा को महाकाव्यों और पौराणिक कथाओं से जोड़े रखा ।

## भारतीय सिनेमा का विकास .

1913 से 1947 का समय– इस समय देश की अधिकांश जनता अशिक्षित थी साथ ही उन्हें अपने धार्मिक ग्रंथो के संबंध में अधिक जानकारी नहीं थी। सिनेमा ने उनकी सुनी सुनाई कथा कहानियों को साकार रूप प्रदान किया तथा समाज में धर्म–अधर्म, सत्य वचन का पालन, अहिंसा जैसे मूल्यों को जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास किया।

स्वतंत्रता के बाद का दौर 1947 से 1970– स्वतंत्रता के पश्चात् 1947 से 1970 तक के लगभग दो दशकों में कुछ अधिक फिल्मों का निर्माण प्रारंभ हुआ। इनमें मेथेलॉजिकल फिल्मों की संख्या स्वतंत्रता से पूर्व की अपेक्षा तो अधिक थी, किंतु फिर भी यह संख्या बहुत अधिक नहीं थी।यद्यपि यह समय स्वतंत्रता के उपरांत का समय था और इस समय तक लोगों की पसंद के अनुसार देश प्रेम व राष्ट्रभक्ति से युक्त फिल्मों का बहुतायत निर्माण हुआ। इन फिल्मों को लोगों ने बहुत अधिक प्रेम से व सम्मान भी दिया, किंतु इस युग में भी मेथेलॉजिकल फिल्मों निर्माण होता रहा जिन्होंने लोगों के मन में अपना अलग स्थान स्थापित किया और जन–मानस में अपनी गहरी छाप छोड़ी। इस काल की प्रमुख मेथेलॉजिकल फिल्में बालक ध्रुव व संपूर्ण रामायण थी। इन कथाओं का मूल मुख्यतः महाकाव्य और पौराणिक आख्यान ही हैं। इन फिल्मों का उद्देश्य समाज को धर्म एवं नैतिकता के आदर्श रूप से परिचित कराने के साथ–साथ उच्चतम नैतिक आदर्श की स्थापना करना भी था।

सन् 1970 से 2000– इस समय तक भारतीय सिनेमा में मेथेलॉजिकल फिल्मों के साथ–साथ धारावाहिकों की एक नवीन व अविरल धारा बह निकली। फिल्मों व धारावाहिकों के इस संगम ने लोगों के अंदर पौराणिक कथाओं को लेकर नया दृष्टिकोण विकसित किया। धारावाहिकों के प्रति लोगों के लगाव का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि गांव–घर में बच्चे–बूढ़े सभी अपने कार्यों को स्थगित करते हुए इन धारावाहिकों को देखते थे। इन धारावाहिकों का प्रसारण टेलीविजन पर होने का परिणाम यह हुआ कि इन्होंने अपनी पकड़ गांव .गांव और घर–घर तक बना ली। जहां सिनेमा देखने वालों की संख्या सीमित थी वहीं इन धारावाहिकों ने एक नया दर्शक वर्ग तैयार कर दिया। दर्शकों की संख्या वृद्धि से धारावाहिकों के निर्माण में वैविध्य देखने को प्राप्त हुआ। देश की अधिकांश जनता अभी भी सिनेमाघरों से दूर थी जिसका लाभ इन पौराणिक धारावाहिकों को भी प्राप्त हुआ। इस लंबे का कालखंड में कालजयी पौराणिक धारावाहिकों एवं मेथेलॉजिकल फिल्मों का निर्माण हुआ। रामायण, महाभारत, श्री कृष्णा, ओम नमः शिवाय, जय हनुमान जैसे पौराणिक धारावाहिकों का निर्माण इस कालखंड की बड़ी उपलब्धियों में से है। यह धारावाहिक साप्ताहिक होते थे। इन धारावाहिकों का एक एपिसोड देखने के पश्चात् पूरे सप्ताह लोगों के मन में इनके प्रति उत्सुकता बनी रहती थी एवं हर जगह उनकी चर्चा होती रहती थी।

इन धारावाहिकों का इतना अधिक प्रभाव था, कि इनमें काम करने वाले लोगों में नए कलाकारों के साथ–साथ कई स्थापित कलाकारों ने भी अभिनय किया। इन पौराणिक धारावाहिकों ने कुछ अभिनेताओं को उनके कैरियर के शिखर तक पहुंचा दिया। राम के रूप में अरुण गोविल, श्री कृष्ण के रूप में नितीश भारद्वाज, भीष्म के रूप में मुकेश खन्ना कुछ ऐसे ही कलाकार थे जिनकी प्रसिद्ध का आधार आज भी वही पौराणिक पात्र हैं जिनका उनके द्वारा अभिनय किया गया। यद्यपि इस काल में कुछ पौराणिक फिल्मों का भी निर्माण हुआ किंतु धारावाहिकों की अधिकता और उनकी विषय विविधता के कारण लोगों का झुकाव उनकी ओर अधिक रहा। इस काल में जय संतोषी मां, हर–हर गंगे और भक्ति में शक्ति जैसी फिल्में सिनेमा घरों में प्रदर्शित हुई। जय संतोषी मां इन फिल्मों

में सबसे अधिक सफल रही।

इस कालखंड में निर्मित फिल्मों एवं धारावाहिकों का मूल उद्देश्य भी धार्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिकता पर ही केंद्रित था, किंतु धीरे–धीरे उन में प्रयोग–धर्मिता के दर्शन होने प्रारंभ हो गए। नयी तकनीकों के विकास ने इन नए प्रयोगों को और अधिक बल दिया। पौराणिक धारावाहिकों के लिए तकनीक ने संजीवनी का काम किया। इन तकनीकी विकासों ने इनके उद्देश्य को भी कुछ हद तक परिवर्तित करने का प्रयास किया अब इनका उद्देश्य केवल धार्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक ही नहीं रहा वरन् अब वह व्यवसायिकता की ओर अग्रसर हो गया। कुछ निर्देशकों ने व्यावसायिक सफलता को ध्यान में रखकर धारावाहिकों एवं फिल्मों का निर्माण करना प्रारंभ किया।

सन् 2000 से अद्यतन–सन 2000 ई के बाद भारतीय हिंदी सिनेमा में टेलीविजन के क्षेत्र में पौराणिक फिल्मों एवं धारावाहिको के निर्माण में उल्लेखनीय प्रगति हुई। इस काल में पौराणिक पात्रों से युक्त अनेक कार्टून फिल्मों का निर्माण भी प्रारंभ हो गया जिसने बच्चों और बड़ों दोनों को आकर्षित किया। इन कार्टून पात्रों ने बाल हृदय पर अपनी गंभीर छाप छोड़ी। सन 2000 ई के बाद निर्मित हिंदी फिल्मों व कार्टून फिल्मों के निर्माण में व्यापक तकनीक का प्रयोग किया जाने लगा। 3D तकनीक के विकास ने दर्शकों को फिल्में देखने का नवीन अनुभव प्रदान किया। इसके साथ–साथ वीएफएक्स के प्रयोग ने असंभव दृश्यों को संभव बनाकर लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया। यह सभी तकनीकें पौराणिक फिल्मों के दृश्यांकन के अनुरूप होने के कारण फिल्मों का भव्य रूप उभरकर दर्शकों के समक्ष प्रकट हुआ जिसे दर्शकों ने खूब प्यार और समर्थन दिया। ब्रह्मास्त्र एवं कल्कि दो प्रमुख हिंदी सिनेमा की फिल्में हैं जिनमें पौराणिक कथाओं को आधार मानकर वी एफ एक्स एवं आधुनिक तकनीकी प्रयोग करके प्रस्तुत किया गया जिसे दर्शकों ने भी अच्छी प्रतिक्रिया दी एवं फिल्म समीक्षकों को ने भी इसे साराहा। ब्रह्मास्त्र में आग्नेयास्त्र, पाशुपतिअस्त्र, वायु अस्त्र जैसे पौराणिक मिथो का उल्लेख किया गया जबकि कल्कि में महाभारत के पात्र अश्वत्थामा एवं उसको प्राप्त शाप को आधार बनाकर फिल्म का निर्माण किया गया है।

इस काल में फिल्मों के निर्माण में भव्यता और तकनीकी के दर्शन तो होते है, किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि फिल्में अपने प्रारंभिक उद्देश्यों यथा धर्म, दर्शन, नैतिकता, संस्कृति इत्यादि से विचलित दिखाई पड़ती है। ऐसा लगता है कि इन फिल्म के दो ही उद्देश्य रह गए हैं, प्रथम धन प्राप्ति तथा दूसरा मनो विनोद। आचार्य भामह ने काव्य का लक्षण दिया है–

धर्मार्थ काममोक्षेषु वैचक्ष्णयम कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं चसाधु काव्य निबन्धनम्।

अगर हिंदी सिनेमा के परिप्रेक्ष्य में इस लक्षण को समझें तो एक सुंदर फिल्म वह है जिससे धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्ट्य की सिद्धि हो इसके साथ ही साथ वह निर्माण कर्ता की कीर्ति को दिग् दिगंन्तर तक फैलाने का कार्य करे और समाज में प्रेम एवं सद्भाव बढ़ाने के साथ–साथ आत्मिक सुख की सृष्टि करे ।भारतीय पौराणिक फिल्में निश्चय ही इन सभी आदर्शों पर खरी उतरती हैं।

**उपसंहार**– अंधविश्वास व संस्कृति की समृद्धता दोनों ही बातों का हमारे सिनेमा में परिदृश्य होता है। क्योंकि एक तरफ भारत की संस्कृति को पूरे विश्व तक पहुंचाना सिनेमा के विकास के लिए बहुत जरूरी है तो कहीं न कहीं हमें अंधविश्वास को फिर से बढ़ावा न देकर कुरीतियों को भी आधुनिक समय में पनपने नहीं देना है । हमने बहुत ही बलिदानों के पश्चात स्वयं को बड़ी मुश्किल से संभालते हुए 21वीं सदी तक का सफर तय किया है इसलिए बहुत ही आवश्यक है कि हम ऐसी फिल्मों को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करें जो हमारी संस्कृति एवं महान पौराणिक कथाओं व परंपराओं को अपने मूल रूप में प्रस्तुत करते हुए समाज को स्थिर व सुव्यवस्थित बनाए । वर्तमान व भविष्य में आने वाली पीढियों को अपनी संस्कृति के मूल उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहयोग करें जिससे दुनिया के सभी देशों को इस प्राचीनतम भारतीय संस्कृति की महानता से अवगत कराया जा सके एवं उससे संपूर्ण विश्व को लाभान्वित किया जा सके। सिनेमा समाज का दर्पण होता है अतएव इस दर्पण पर किसी प्रकार की गंदगी नहीं होनी चाहिए। साफ–सुथरे तरीके से ही भारतीय संस्कृति व पुरातन कथाओं के माध्यम से संपूर्ण विश्व को अपनी भारतीय संस्कृति को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया जा सके जिससे वसुधैव कुटुंबकम एवं विश्व बंधुत्व की भावना को पोषित किया जा सके।

## Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

## References:


1. https://share.google/IMkgZDYSgeQP5zNsi
2. https://www.etvbharat.com/hi/!entertainment/ramayana-to-mahavatar-narsimha-indian-mythology-grand-comeback-in-cinema-see-list-hindi-news-hin25071901731
3. https://artsandculture.google.com/story/RAUBKFdBilDWmg
4. https://www.scribd.com/document/657467934/mythology-in-indian-cinema
5. https://www.csirs.org.in/uploads/paper_pdf/sahitya-aur-cinema-ke-antarsambandh.pdf
6. https://www.inspirajournals.com/uploads/Issues/1649351376.pdf
7. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/interrelationship-of-literature-cinema-and-society
8. https://www.researchgate.net/publication/352786271
9. https://share.google/UlEzi9CRoiBqHjV0F


## Cite this Article-


*'डॉ. अंजली त्यागी, हिमांशु कुमार', 'हिंदी सिनेमा में पौराणिक हिंदी फिल्मों का विकास: आधुनिक परिप्रेक्ष्य '* Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:1, Issue:05, November-December 2025.

Journal URL- https://www.shodhpith.com/index.html

Published Date- 2 November 2025

DOI-10.64127/Shodhpith.2025v1i6001